विचार बिन्दु

शासन के समर्थक को जनता पसंद नहीं करती और जनता के पक्षपाती को शासन। इन दोनो का प्रिय कार्यकर्ता दुर्लभ है। –पंचतंत्र

तबादलों का यथार्थ!

सितंबर 2025 में राजस्थान सरकार के माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने एक आदेश ज़ारी करके राज्य के 4527 प्रधानाचार्यों के तबादले कर दिए। निदेशालय इससे एक माह पहले 500 प्रधानाचार्यों के तबादले और कर चुका था। इस तरह एक माह की अवधि में लगभग पांच हज़ार प्रधानाचार्यों को इधर से उधर कर देने का कीर्तिमान सरकार ने कायम किया। निश्चय ही इस सूची में कुछ प्रधानाचार्य ऐसे होंगे जिन्होंने ख़ुद अपना तबादला चाहा होगा, लेकिन विभिन्न समाचार माध्यमों में हुई चर्चाओं को प्रामाणिक मानें तो अधिकांश प्रधानाचार्यों को उनकी इच्छा के विरुद्ध इधर से उधर किया गया है। विभिन्न आलोचनाओं के जवाब में सरकार ने हमेशा की तरह इन तबादलों का आधार प्रशासनिक बता कर अपना दायित्व पूरा कर लिया है।

सरकारी प्रक्रिया से जो परिचित हैं वे जानते हैं कि सरकार जब किसी का तबादला करती है तो उसे योगकाल (जॉइनिंग टाइम), असुविधा भत्ता और यात्रा व्यय देना होता है। परिवार के यात्रा व्यय के अतिरिक्त घर गृहस्थी का सामान ले जाने के लिए भी खर्चा दिया जाता है। अगर बहुत मोटा अनुमान लगाएं तो एक तबादले पर सरकार को औसतन एक लाख रुपया खर्च करना होता है। गणना आप कर लें कि पांच हज़ार तबादलों पर सरकार को कितना खर्च करना पड़ा होगा। कहना अनावश्यक है कि यह पैसा अंततः आम नागरिक की जेब से गया है।

मैं सोचना चाहता हूं कि ऐसी कौन-सी प्रशासनिक वजहें होंगी जिनके कारण पांच हज़ार प्रधानाचार्यों को इधर से उधर किया गया है। सामान्यतः सरकार में माना जाता है कि एक व्यक्ति को एक ही जगह लम्बे समय तक जमे नहीं रहने देना चाहिए, क्योंकि दीर्घ अवधि में वहां उसके ऐसे रिश्ते बन जाते हैं जो प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन में बाधक होते हैं। यह बात प्रशासनिक पदों के लिए जितनी सही है शैक्षिक पदों के लिए उतनी सही नहीं है। फिर भी अगर मान लें कि यह बात सब पर लागू होती है तो एक व्यवस्था ऐसी बनाई जा सकती है कि कोई भी व्यक्ति एक ही स्थान पर इतने समय से अधिक पदस्थापित न रहे। इतने समय, मान लीजिए तीन या चार बरस। इसके अलावा, अगर किसी का कार्य संतोषप्रद न हो तो उसे समय से पहले हटाकर अन्यत्र भेज दिया जाए। वैसे सवाल यह भी है कि एक व्यक्ति अगर एक स्थान पर ठीक से काम नहीं कर रहा है तो क्यों और कैसे वह दूसरे स्थान पर ठीक काम कर लेगा। उसको दंड देकर किसी नई जगह पर भेज कर उसके काम से प्रभावित होने वालों को दंड देना कहां का न्याय है? तबादले को दंड के रूप में प्रयुक्त करना किसी भी तर्क से उचित नहीं है। फिर, एक श्रेणी ऐसे कर्मचारियों की भी हो सकती है जो किसी ख़ास जगह पर पदस्थापित रहने में असुविधा महसूस कर रहे हैं और चाहते हैं कि उन्हें उनकी इच्छित जगह पर भेज दिया जाए। निश्चय ही सरकार को ऐसे लोगों की पुकार सुननी चाहिए। अगर कर्मचारी संतुष्ट होगा तो वह अपना कर्तव्य निर्वहन अधिक अच्छी तरह से करेगा। लेकिन यह भी देखा जाना चाहिए कि वह जहां जाना चाह रहा है वहां उसके लिए स्थान रिक्त है या नहीं। यह तो ग़लत होगा कि उसे सुविधा देने के लिए किसी और को वहां से उठाकर कहीं और पटक दिया जाए।

अब तक मैं तबादलों पर प्रशासनिक दृष्टि से बात कर रहा हूं। यह तस्वीर का एक पहलू है। तस्वीर का दूसरा पहलू राजनीतिक है। अब यह कोई रहस्य नहीं है कि हमारे राज्य में सारे के सारे तबादले राजनीतिक आधार पर होते हैं। शुरू-शुरू में नेता लोग अपनी ज़रूरत भर के तबादले ख़ुद करते थे, शेष तबादले प्रशासनिक अमला अपने मानदंडों के आधार पर कर लिया करता था। आहिस्ता-आहिस्ता तबादलों का पूरा अधिकार नौकरशाही के हाथों से फिसल कर नेताओं के हाथों में आ गया है। और वे जैसा चाहते हैं, नौकरशाही वैसा करके, अपना चेहरा बचाने के लिए प्रशासनिक कारणों की ओट लेती है। ये प्रशासनिक कारण अमूर्त होते हैं। कोई तबादला नीति बनाई ही नहीं जाती है। और अगर कहीं थोड़ी बहुत होती भी है तो उसे निष्प्रभावी करने के लिए अनेक गलियां निकाल ली जाती हैं। आजकल साल में साढ़े ग्यारह महीने तबादलों पर बैन रहता है लेकिन पतली गली से उस अवधि में भी तबादले हो जाते हैं। तबादले न हों तो प्रतिनियुक्ति हो जाती है। जो समर्थ हैं वे अपनी पूरी ज़िंदगी प्रतिनियुक्ति पर ही गुज़ार लेते हैं। मुझे अपने विभाग की जानकारी है जहां कुछेक महापुरुषों ने बिना एक भी दिन किसी कॉलेज में पढ़ाए अपनी नौकरी ससम्मानप्रतिनियुक्ति पर ही पूरी कर ली। यह परंपरा अब भी ज़ारी है। अभी ही मेरे विभाग के कुछ लोगों को लेकर एक ख़बर अखबारों में थी।

> **अब किसी को इस बात की परवाह नहीं है कि सरकारी काम ढंग से हो रहा है या नहीं। इस बात की तो ख़ैर परवाह छोड़ ही दीजिए कि लोक सेवक की किसी सुविधा असुविधा की किसी को परवाह है या नहीं। साल में साढ़े ग्यारह माह तबादलों पर प्रतिबंध और जब यह प्रतिबंध हटे तब भी इस बात की कोई आश्वस्ति नहीं कि आपकी बात सुन ली जाएगी। होगा वही जो मंज़ूरे ख़ुदा यानी मंज़ूरे नेता होगा।**

असल में कर्मचारी चाहता है कि वह अपने मनपसंद स्थान पर पदस्थापित रहे। मनपसंद स्थान उसका गृह स्थान हो सकता है, कोई बड़ा और सुविधाजनक शहर हो सकता है या कोई ऐसा पद हो सकता है जिसे आम बोलचाल की भाषा में मलाईदार पद कहा जाता है। कुछ लोग वास्तव में अपने या अपने किसी परिजन के स्वास्थ्य विषयक कारणों से भी किसी ख़ास जगह पदस्थापित रहना चाहते हैं। इस सुविधा की आड़ में लोग अनावश्यक सुविधाएं जुटाने से भी नहीं चूकते हैं। मुझे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जानकारी है जो कैंसर से पीड़ित था और इसलिए उसने किसी कॉलेज में पढ़ाने की बजाय स्वयं को जयपुर में कार्यालय में पदस्थापित करवा रखा था। यहां तक तो ठीक है। लेकिन क्योंकि कार्यालय में ग्रीष्मावकाश नहीं होता है, जैसे ही गर्मी की छुट्टियां होने को होती, वह स्वयं को किसी कॉलेज में पदस्थापित करवा लेता, दो माह के ग्रीष्मावकाश का लाभ लेता और जैसे ही छुट्टियां ख़त्म होने को होती, फिर से कार्यालय में आ जाता। जब उसकी इस चालाकी पर रोक लगाने का प्रयास हुआ तो उसके चाहने वालों ने मानवीयता की दुहाई देना शुरु कर दिया। ऐसे अनगिनत उदाहरण मिल जाएंगे। यह सब प्रशासनिक की बजाय राजनीतिक आधार पर होने लगा है। और राजनीति नियमों और व्यवस्थाओं की बजाय वफ़ादारी की परवाह करती है। अगर आप हमारे हैं तो आप जो चाहें वह ले लीजिए, और अगर आप हमारे नहीं हैं तो फिर भुगतिये! यह खेल पूरे राज्य में, और शायद अन्य राज्यों में भी चल रहा है।

अब किसी को इस बात की परवाह नहीं है कि सरकारी काम ढंग से हो रहा है या नहीं। इस बात की तो ख़ैर परवाह छोड ही दीजिए कि लोक सेवक की किसी सुविधा असुविधा की किसी को परवाह है या नहीं। साल में साढ़े ग्यारह माह तबादलों पर प्रतिबंध और जब यह प्रतिबंध हटे तब भी इस बात की कोई आश्वस्ति नहीं कि आपकी बात सुन ली जाएगी। होगा वही जो मंज़ूरे ख़ुदा यानी मंज़ूरे नेता होगा। कोई कर्मचारी अगर चाहे कि सीधे सरल तरीके से उसकी बात सुन ली जाएगी और उसे वांछित राहत मिल जाएगी, तो उसे निराश ही होना पड़ेगा। मुझे अपने सेवा काल का एक प्रकरण भुलाए नहीं भूलता है। एक महिला यह गुज़ारिश लेकर आई थी कि उसका तबादला उसके वर्तमान पदस्थापन स्थान से अन्यत्र कहीं भी कर दिया जाए, क्योंकि वह अपने ससुराल वालों से बहुत त्रस्त थी। अब यह कोई नामुमकिन मांग नहीं थी। अगर सरकार संवेदनशील होती तो उसकी बात सुन लेती। क्या हुआ यह बताने की ज़रूरत नहीं है। अगर में ही जवाब छिपा हुआ है। एक तरफ ऐसी असंवेदनशीलता और दूसरी तरफ एक ही झटके में पांच हज़ार प्रधानाचार्यों के तबादले। किसी को न तो सरकारी खर्च की परवाह और न इस बात की कि पूरे राज्य के शिक्षा तंत्र पर इस तुग़लकी फ़रमान का क्या असर पड़ेगा। जिन लोगों को अनावश्यक रूप से अनचाही जगहों पर फेंका गया है क्या वे मन लगाकर अपना काम करेंगे? लेकिन काम की और व्यय भार की परवाह है ही किसको? अपना राजनीतिक वर्चस्वप्रदर्शित करना है सो कर दिया!

हमारे राजनेताओं ने अपने स्वार्थों के लिए पूरे के पूरे प्रशासनिक तंत्र को लुंज पुंज करके रख दिया है। कर्मचारी त्रस्त हों, उनकी बला से। काम ठप्प हो जाए, उनकी बला से। बस, उनका इक़बाल बुलंद रहे! यह सरकार जाएगी, किसी अन्य दल की सरकार आएगी, वह भी ऐसा ही करेगी। आखिर यह सरकार भी तो पिछली सरकारों के बताए मार्ग पर चल रही है! कुछ कर्मचारी थाली के बैंगन की तरह लुढ़क कर इधर से उधर चले जाएंगे। जो ऐसा नहीं कर पाएंगे, रोते रहेंगे!

–अतिथि संपादक,
दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

झूट फरेब पर सत्य, अधर्म पर धर्म एवं अहंकार पर करुणा की विजय का पर्व दशहरा

डॉ. जे.के. गर्ग

रावण समस्त वेदों एवं वेदान्त का ज्ञाता और अत्याधिक बलशाली सम्राट सोने की लंका का स्वामी था। रावण क्रोधी और अहंकारी शासक होते हुए भी महान महान शिव भक्त था जिसे देवों के देव महादेव ने अनेको वरदान दिए थे। रावण खुद को भगवान विष्णु का दुश्मन मानता था। रावण के पिता विश्रवा ऋषी थे एवं माता राक्षस कुल की थी, इसलिए रावण में एक ब्राह्मण के समान ज्ञान एवं राक्षस के समान अपार शक्ति थी जिसे प्राप्त कर रावण के अंदर अहंकार कूट कूट कर भरा हुआ था। रावण के विधर्मी कृत्यों और अत्याचारों को नष्ट करने के लिए भगवान विष्णु मर्यादा पुरुषोत्तम राम के रूप में अवतरित हुए। दशहरा का दूसरा मतलब भगवान राम के द्वारा रावण के दसों सिर जो दस पापों और दस तामसी आदतों के सूचक हैं यानि काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी इन सभी को समूल नष्ट करने का पर्व है। दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत की ख़ुशी में मनाया जाने वाला पर्व हैं। दशहरा असत्य पर सत्य अधर्म पर धर्म एवं अहंकार पर करुणा की विजय की जीत की जश्न के रूप में मनाया जाने वाला त्यौहार हैं।

किसानो के लिए यह नयी फसलों के घर आने का जश्न हैं उनके लिये यह दशहरा परिश्रम से प्राप्त नई फसल प्राप्त करने का पर्व है। पुरातन काल में इस दिन औजारों एवम हथियारों की पूजा की जाती थी, क्यूंकि वे दशहरा युद्ध में मिली जीत के जश्न के तौर पर देखते थे। वास्तव में विजयादशमी आपसी रिश्तो को मजबूत करने एवम भाईचारा बढ़ाने के लिए होता हैं, जिसमे मनुष्य अपने मन में भरे घृणा एवम बैर के मेल को साफ़ करने का संकल्प लेता हैं।

राम ने आश्विन शुक्ल दशमी के दिन रावण को पराजित करके उसका का वध किया था इसलिए प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल को विजयादशमी के रूप सनातन धर्मी मनाते हैं। विजयदशमी को हम अन्याय पर न्याय की विजय सौहार्द की अहंकार की पराजय दिन के रूप में मनाते है। ध्यान रखें कि विजयदशमी मात्र इस बात का प्रतीक नहीं है कि अन्याय पर न्याय अथवा बुराई पर अच्छाई की विजय हुई थी किन्तु वास्तविकता में विजया दशमी का दिन हमें बुराई में भी अच्छाई ढूँढने का अवसर है। रावण वध के बाद स्वयं भगवान राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को रावण के पास जाकर रावण से राजनीति सीखने और गूढ़ ज्ञान प्राप्त करने का आदेश दिया था। रावण ने लक्ष्मणजी को तीन सीख दी पहली शत्रु को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए दुसरी शुभ कार्य जितनी हो जल्दी कर देना चाहिये तीसरा अपने जीवन का कोई राज किसी को भी नहीं बतलाना चाहिये रावण ने लक्ष्मणजी को कहा कि यहां भी मैं चूक गया क्योंकि विभीषण मेरी मृत्यु का राज जानता था, ये मेरे जीवन की सबसे बड़ी गलती थी।

आईये आज हम सभी विजयादशमी को मनाये तामसी प्रवत्तियो पर सात्विक प्रव्रत्तियों के विजय दिवस के रूप में (जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मद मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी को त्याग कर स्नेह प्रेम और विनम्रता अपनाने के पर्व के रूप में मनायें। सच्चाई तो यही है कि रावण की राम के हाथों पराजय उसके अहंकार के कारण ही हुयी थी। तुलसीदासजी भी रावण के अहंकार को उसकी पराजय और म्रत्यु का मुख्य कारण बताते है। अहंकार ने ही रावण को जनमानस की नजरों में पराजित योद्धा और बुराईयों का प्रतीक बना दिया है। रावण-कुंभकर्ण-मेघनाद के पुतलों को जलाते वक्त कुछ ही क्षणों के लिये हमारे मन में भगवान श्रीराम के आदर्शों को अपने जीवन में अपना कर सभी प्रकार दुष्कर्मों एवं तामसिक प्रव्रत्तियों यानी काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा एवं चोरी को त्यागने का विचार आता है, किन्तु हमारा यह विचार श्मशानी वैराग्य की तरह ही क्षणिक होता है क्योंकि कुछ ही समय बाद हम सभी अपने सांसारिकता के प्रपंचों में तल्लीन हो कर तामसिक प्रवृत्तियों के चंगुल में फंस जाते हैं। काश अगर हम हम इस सात्विक सोच को हमेशा के लिए अमली जामा पहना पाते तो हमारा जीवन एक अलग ही किस्म का बन जाता और हमारे समाज में झूठ, फरेब, धोखाधडी, लूट, चोरी-चकारी, हिंसा, मारपीट, अपहरण-बलात्कार की भयावह घटनायें घटित ही नहीं हो।

जरा सोचिये और चिंतन मनन कीजिये कि क्या ऐसा हो रहा है? अगर नहीं तो रावण-कुंभकर्ण-मेघनाद के पुतलों को जलाने और भव्य राम लीलाओं को देखने एवं श्री राम की कसमें खाने का क्या औचित्य है? क्यों हम लाखों करोड़ो रूपये पुतले बनाकर उन्हें जलाने में व्यर्थ खर्च करते हैं? क्यों हमारे मन में काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, आलस्य की जड़ें दिन प्रति दिन मजबूत बनती जा रही है ? क्यों हम पर निंदा करने में सबसे आगे रहते हैं? क्यों हमारी बहन- बेटियां अपहरणकर्ताओं के हाथों रोजाना बेइज्जत होती है? क्यों भ्रष्टाचार का विषाणु हममें आत्मसात हो गया है ? क्यों हमारी कथनी और कथनी में अंतर बढ़ता ही जा रहा है ? क्यों हमारी जुबान पर राम किन्तु बगल में छुरी होती है ? क्यों जरा सी सत्ता मिलते ही हम अहंकारी बन जाते हैं ? कहते हैं कि देवता वो होते हैं जो कभी भी गलतीयां नहीं करते हैं,वहीं मनुष्य वें होते हैं जो दूसरों की गलतीयों से सीखकर खुद वैसी गलतीयां नहीं करते हैं, वहीं मूढ़ व्यक्ति वो होता है जो बार-बार गलतीयां करता है, उन्हें दोहराता है और अपने को सुधारने का कोई प्रयास भी नहीं करता है।

अतः आज हम सभी अपने सच्चे मन से स्वयं से यह वादा करें कि अपने भारत को प्रगतिशील, उन्नत, सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने हेतु परस्पर स्नेह,सौहार्द, सामंजस्य स्थापित करने हेतु क्रोध, अभिमान, लालच- लोभ, मद, मोह, अहंकार,हिंसा चोरी-डकेती,ईर्ष्या-डाह का परित्याग कर आपस में सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध बना कर रहेगें। एक-दूसरे की मदद करेगें। बहन बेटियों के सम्मान की रक्षा करेगें। अगर ऐसा हो पाया तो सही अर्थों में हम श्री राम के आदर्शों को अंगीकार कर विजयदशमी के पर्व को सार्थक बना सकेंगे।

हम सभी को इन तामसिक आदतों के विनाशकारी नतीजों के बारे में आत्ममंथन करना होगा। लोभ-लालच के वशीभूत होकर रावण ने भगवान शिवजी से अपने लिए सोने की लंका मांग ली एवं लंकापति बन स्वयं को सर्वश्रेष्ठ,शक्तिशाली मान अवांछित कार्यों में लिप्त होने लगा। रावण की इर्ष्या-डाह-जलन की प्रव्रत्ति की वजह से उसके हितेषी भी मन ही मन उससे दूरी बनाने लगे। इसी वजह से रावण का सगा भाई विभीषन रावण को छोड़ कर राम का शरणार्थी बन गया। आज भी इर्ष्या-जलन की वजह आदमी बेवजह यह सोचकर दुखी रहता है कि मेरा पड़ोसी , मेरे रिश्तेदार, मेरे दोस्त मुझसे ज्यादा सुखी कैसे और क्यों हैं ?

पीठ पीछे किसी की निंदा कर हम अपना ही अहित करते हैं और दूसरों को अपना दुश्मन बनाते है। रावण की परनिंदा की आदत भी उसकी पराजय का कारण बनी। रावण का अभिमान ही उसके पतन का कारण बना। हम हमारे अभिमान-घमंड की वजह से दूसरों के स्वाभिमान को ठेंस पहुंचाते हैं। कहावत है कि घमंडी का सिर हमेशा नीचा ही रहता है। हमने कल के बादशाह को कंगाल बनते हुए देखा है। पवनपुत्र हनुमानजी ने लंकापति रावण के वैभव को देख कर कहा कि अगर रावण में अधर्म अधिक बलवान नहीं होता तो वह देवलोक का भी स्वामी बन जाता।सच्चाई तो यही है कि विजयादशमी का पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम अपनी दिनचर्या एवं जीवन में से सभी प्रकार के पापों यानि काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा, अधर्म और चोरी को छोड़ने का संकल्प लेकर उसे मूर्त रूप देगें और तभी सही मायनों में राम राज्य स्थापित हो सकेगा। राम राज्य की स्थापना मात्र मंदिरों में माथा टेकने और राम राम के नाम को जपने से नहीं होगा वरन राम के दुवारा स्थापित मानवीय आदर्शों को मूर्त रूप देने से होगा।

–डॉ. जे.के. गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

अल्बानिया का एआई मिनिस्टर भ्रष्टाचार के विरुद्ध डिज़िटल क्रांति की शुरुआत

डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

अल्बानिया, बाल्कन प्रायद्वीप का एक छोटा सा देश, जो यूरोपीय संघ में शामिल होने के लिए प्रयासरत है लेकिन सरकारी कामकाज में फैला भ्रष्टाचार इसमें अड़चन बन रहा है, ऐसे में दुनिया को आश्चर्य में डालते हुए 11 सितंबर 2025 को प्रधानमंत्री एडी रामा ने अपनी चौथी सरकार में डिएला नामक एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित मंत्री को नियुक्त किया कर दिया। यह अपने आप में दुनिया का पहला ऐसा उदाहरण है। डिएला, जिसका अर्थ अल्बानियाई भाषा में सूर्य या सूर्योदय है, सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया की जिम्मेदारी संभालेगी। इसका उद्देश्य सरकारी टेंडरों में व्याप्त भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त करना है। यह कदम अल्बानिया की भ्रष्टाचार-ग्रस्त छवि को सुधारने और ईयू सदस्यता की राह प्रशस्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी प्रयास है। अल्बानिया लंबे समय से भ्रष्टाचार के दलदल में फंसा हुआ है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार, 2024 में देश का भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक सीपीआई स्कोर 37 था, जो वैश्विक औसत से काफी नीचे है। सरकारी टेंडर, ड्रग तस्करी, हथियारों की तस्करी और मनी लॉन्ड्रिंग जैसे मुद्दे यहां आम हैं। ईयू सदस्यता के लिए 2027 तक भ्रष्टाचार नियंत्रण एक प्रमुख शर्त है। प्रधानमंत्री रामा, जो 2013 से सत्ता में हैं, ने कई साहसिक कदम उठाए हैं।लेकिन डिएला का आगमन उन सबसे कहीं आगे है। प्रधानमंत्री रामा का मानना है कि डिएला पब्लिक प्रोक्योरमेंट सिस्टम को 100 प्रतिशत भ्रष्टाचार-मुक्त बना देगी। यह प्रक्रिया तेज, कुशल और पूर्ण रूप से जवाबदेह होगी।

डिएला का सफर जनवरी 2025 से शुरू होता है। अल्बानिया की राष्ट्रीय सूचना सोसाइटी एजेंसी एकेसएचआई ने माइक्रोसॉफ्ट के एज़्योर और ओपनएआई के बड़े भाषा मॉडल्स एलएलएम का उपयोग कर इसे ई-आल्बानिया पोर्टल पर वर्चुअल असिस्टेंट के रूप में लॉन्च किया। प्रारंभिक संस्करण डिएला 1.0 एक टेक्स्ट-आधारित चैटबॉट था, जो नागरिकों को ऑनलाइन सेवाएं प्रदान करता था। सितंबर 2025 में अपडेटेड डिएला 2.0 में वॉइस इंटरैक्शन और एक एनिमेटेड अवतार जोड़ा गया, जो पारंपरिक ज़ाद्रिमा परिधान में एक महिला का प्रतिनिधित्व करता है। अल्बानियाई अभिनेत्री अनिला बिशा ने इसका चेहरा और आवाज प्रदान की है, जो दिसंबर 2025 तक वैध है। डिएला ने अब तक 36,000 से अधिक दस्तावेज जारी किए और लगभग 1,000 सेवाएं प्रदान की , जिससे 9,72,000 से अधिक अनुरोधों का निपटारा हुआ।

मंत्री के रूप में डिएला की भूमिका सार्वजनिक खरीद को पारदर्शी बनाने पर केंद्रित है। पारंपरिक प्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप और पक्षपात आम है, जहां टेंडर राजनीतिक अभिजात वर्ग के हाथों में रहते हैं। डिएला एआई का उपयोग कर बोली लगाने वाली कंपनियों के मानदंडों की जांच करेगी, डेटा विश्लेषण से अनियमितताओं का पता लगाएगी और निर्णय प्रक्रिया को स्वचालित करेगी। रामा के अनुसार, यह मॉडल चैटजीपीटी और जेमिनी जैसे एलएलएम पर आधारित है, लेकिन सार्वजनिक खरीद के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया। डिएला ने 18 सितंबर 2025 को अल्बानियाई संसद को संबोधित करते हुए कहा, "मैं लोगों को बदलने के लिए यहां नहीं हूं, बल्कि उनकी सहायता के लिए हूं।" भाषण में डिएला ने भरोसा दिलाया कि वह कर्तव्य, जवाबदेही, पारदर्शिता और गैर-भेदभावपूर्ण सेवा के लिए संकल्पित है और उसका कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा या हित भी नहीं हैं। यह नियुक्ति अल्बानिया की व्यापक डिजिटल रणनीति का हिस्सा है। 2024 में, देश ने एआई का उपयोग कर 2.5 लाख से अधिक ईयू दस्तावेजों और कानूनों का अनुवाद किया। वहां पर ड्रोन और सैटेलाइट्स के माध्यम से क्षेत्रीय निगरानी भी एआई पर निर्भर है। रामा ने ओपनएआई की पूर्व सीटीओ मिरा मुर्ति जो स्वयं अल्बानियाई मूल की हैं से भी परामर्श लिया है। वैश्विक भ्रष्टाचार विरोधी विशेषज्ञ डॉ. आंदी होक्सहाज का मानना है कि एआई बोली शर्तों की स्पष्ट जांच से भ्रष्टाचार कम कर सकता है। इससे अल्बानिया लीपफ्रॉग रणनीति अपना सकता है, जहां यह विकसित देशों को पीछे छोड़ते हुए सीधे उन्नत तकनीक पर पहुंच सकता है।

हालांकि, यह कदम विवादों से घिरा है। अल्बानियाई विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता गजमेंट बर्धी ने इसे 'प्रोपगैंडा फैंटेसी' और "सरकारी चोरी छिपाने का वर्चुअल पर्दा" बताया। नैतिक आलोचक कहते हैं कि एआई भ्रष्टाचार का समाधान नहीं है, क्योंकि इसका निर्णय डेटा पर निर्भर करता है, जो मानवीय पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकता है। हालांकि संवैधानिक बाध्यताओं की बात करें तो एक कैबिनेट मंत्री को एक निश्चित न्यूनतम आयु का मानसिक रूप से सक्षम नागरिक होना चाहिए, जो डिएला पूरी नहीं करती। वहीं जवाबदेही की कमी, प्रक्रिया में हस्तक्षेप और साइबर सुरक्षा जोखिम प्रमुख खतरे हैं। मानव संकटों में एआई स्वामित्व नहीं ले सकता, और तकनीक के आधिपत्य से लोकतांत्रिक बहस की गुंजाइश भी कम हो जाती है। वैश्विक संदर्भ में, डिएला अद्वितीय है। यूके में हम्फ्री और फ्रांस में अल्बर्ट जैसे डिजिटल असिस्टेंट हैं लेकिन निर्णय लेने की शक्ति एआई को सौंपना अभूतपूर्व है।

मानव बनाम मशीन की बहस के बीच अल्बानिया का यह प्रयोग अन्य विकासशील देशों के लिए मॉडल हो सकता है, जहां भ्रष्टाचार शासन का सबसे बड़ा बाधक है। डिएला यदि सफल हुई, तो यह भ्रष्टाचार-मुक्त शासन का प्रतीक बनेगी लेकिन असफलता मानवीय पर्यवेक्षण की अनदेखी का सबक देगी। वैश्विक स्तर पर एआई का उपयोग बढ़ रहा है। 2025 खत्म होने तक वैश्विक स्तर पर 1.36 अरब से अधिक एआई-सक्षम उपकरण होंगे। लेकिन अंततः, तकनीक मानव मूल्यों की दासी है। अल्बानिया का यह प्रयोग न केवल बाल्कन, बल्कि वैश्विक शासन को नया आयाम दे सकता है।

(लेखक स्वतंत्र चिंतक है)
–डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

अजमेर की सोनिया ने शिक्षा को प्राथमिकता दी, सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह का पंजीयन कराया

भीलवाड़ा, (निसं)। सकल जाट समाज द्वारा राजस्थान मेवाड़ जाट महासभा भीलवाड़ा के तत्वावधान में आयोजित होने वाले तृतीय जाट सामूहिक विवाह सम्मेलन में शिक्षा की जागरूकता का एक प्रेरणादायक उदाहरण सामने आया है। अजमेर जिले के ग्राम पांडोलाई निवासी महादेव गढ़वाल की पुत्री सोनिया गढ़वाल ने शादी के ढोंग और दिखावे को त्याग कर, अपने विवाह का पंजीयन कराया है। यह सामूहिक विवाह आगामी एक नवंबर को हरणी महादेव, भीलवाड़ा में आयोजित होगा।

सोनिया ने यह निर्णय अपने गुरुदेव महावीर लामरोड और फूफासा रघुनाथ मांड्या की प्रेरणा से लिया है। सोनिया का मानना है कि सामूहिक विवाह में शादी करने से ढोंग और दिखावे में कमी आएगी, जिससे पिता पर पड़ने वाले लाखों रुपये के अनावश्यक बोझ से मुक्ति मिलेगी।

> ■ **सोनिया ने कहा कि पिता अपनी बेटी की शादी में लाखों रुपए खर्च करते हैं और लोग कमियां निकाल कर चले जाते हैं, इससे बेहतर है कि मैं अपनी शादी का पैसा अपनी शिक्षा पर खर्च करूं और एक शिक्षिका बनकर समाज की बेटियों को शिक्षित व जागरूक करूं**

अपनी प्रेरणा बताते हुए सोनिया ने कहा कि पिता अपनी बेटी की शादी में लाखों रुपए खर्च करते हैं और लोग कमियां निकाल कर चले जाते हैं। इससे बेहतर है कि मैं अपनी शादी का पैसा अपनी शिक्षा पर खर्च करूं और एक शिक्षिका बनकर समाज की बेटियों को शिक्षित व जागरूक करूं। दो जोड़ों का पंजीयन ठीठोड़ी तहसील जहाजपुर व लसाड़िया शाहपुरा में हुआ। सोनिया गढ़वाल ने समाज की सभी शादी योग्य बहनों से भी अपील की है कि वे सामूहिक विवाह में शादी के लिए प्रेरित हों, ताकि सामाज में शिक्षा और सादगी को बढ़ावा मिल सके।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 6 अक्टूबर, 2025

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 4:02 तक, वृद्धि योग ꠸दन 1:13 तक, वणिज करण दिन 12:24 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मीन, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 12:24 से रात्रि 10:51 तक रहेगी। आज चान्द पूर्णिमा व्रत, शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, पंचक है। आज कुबेर और लक्ष्मी पूजा (बंगाल में) है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः अमृत सूर्योदय से 7:53 तक, शुभ 9:20 से 10:48 तक, चर 1:42 से 5:10 तक, लाभ-अमृत 3:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:25, सूर्यास्त 6:05

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। चलते व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा।

धनु
घर-अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। आज व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर
आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मानसिक तनाव दूर होने लगेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।